Prokerala

Saturn Transit Report

ANN MARY ALEX

November 29, 1970, 03:10 PM

Kottayam

ॐ भग भवाय विद्महे मृत्यु-रूपाय धीमहि
तन्नो शौरीहि प्रचोदयात् ॥

जन्म विवरण

नाम	Ann Mary Alex
जन्म तिथि	29 November, 1970
जन्म का समय	03:10 pm
जन्म तारीख	रविवार
दिन/रात	दिन
जन्म स्थान	Kottayam
अक्षांश एवं देशांतर	9.58692, 76.5213
समय क्षेत्र सुधार	स्टैण्डर्ड टाइम(+05:30)
अयनांश	लाहिड़ी
जेंडर (लिंग)	पुरुष

वर्ष 1970, 29 नवम्बर, रविवार को दक्षिणायन के समय, सूर्योदय के पश्चात 03:10 PM बजे 21 घटी (नाझिका) और 47 विघटी (विनाझिका) पर, प्रतिपदा तिथि, बव करण, सुकर्मा नित्य योग, ज्येष्ठा नक्षत्र के पहले पद में, मीन लग्न, वृश्चिक सूर्य राशि और वृश्चिक चन्द्र राशि में इस लड़का का जन्म हुआ।

नक्षत्र	चंद्र राशि	सूर्य राशि
ज्येष्ठा पद : 1	वृश्चिक स्कॉर्पियो	वृश्चिक स्कॉर्पियो

पंचांग का विवरण

नीचे दी गई तालिका Ann Mary Alex के जन्म समय के पंचांग विवरण को दर्शाती है।

तिथि (चंद्र दिवस)	प्रतिपदा
नक्षत्र	ज्येष्ठा (1/4)
नक्षत्र प्रभु	बुध
योग	सुकर्मा
करण	बव
चंद्र राशि	वृश्चिक
चंद्र राशि स्वामी	मंगल
सूर्य राशि	वृश्चिक
सूर्य राशि स्वामी	मंगल
राशि चक्र चिन्ह (पश्चिमी प्रणाली)	सैजिटेरियस
आयन	दक्षिणायन
ऋतु	हेमंत
हिंदू माह (अमांत)	अग्रहायण
सूर्योदय	06:27 am
सूर्यास्त	05:56 pm
चंद्रोदय	06:36 am
चंद्रास्त	06:24 pm

नक्षत्र, राशि, और अन्य विवरण	
लग्न राशि	मीन
नवमांश	मीन
योग कारक	गुरू
आत्म कारक	लग्न
अमात्य कारक	गुरू
लग्न आरूढ़	वृषभ
धन आरूढ़	मिथुन
चंद्र-अवस्था	3/12
चन्द्र-वेला	9/36
चन्द्र-क्रिया	14/60
दग्ध राशि	तुला और मकर
देवता	इंद्र
गण	राक्षस गण
चिह्न	कुंडल (कान की बाली)
पशु चिन्ह	हरिण
नाड़ी	वात
रंग	क्रीम रंग
सर्वोत्तम दिशा	पश्चिम
शब्दांश	No, Ya, Yi, Yu
जन्म रत्न	मरकत (पन्ना)
योनि	पुरुष
शत्रु	कुत्ता
वृक्ष	शाल्मली
भूत	वायु
गोत्र	अत्रि

आपकी कुंडली

नीचे उत्तर भारतीय शैली में Ann Mary Alex के लिए लग्न, नवमांश और चंद्रमा चार्ट दिए गए हैं।

लग्न चार्ट

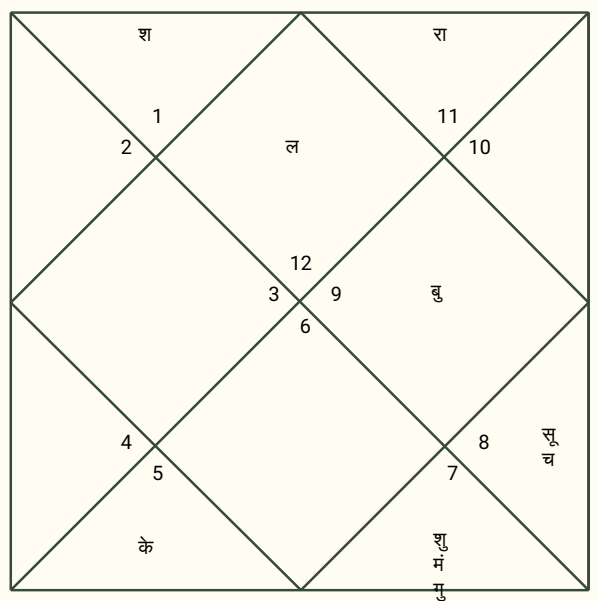

नवमांश चार्ट

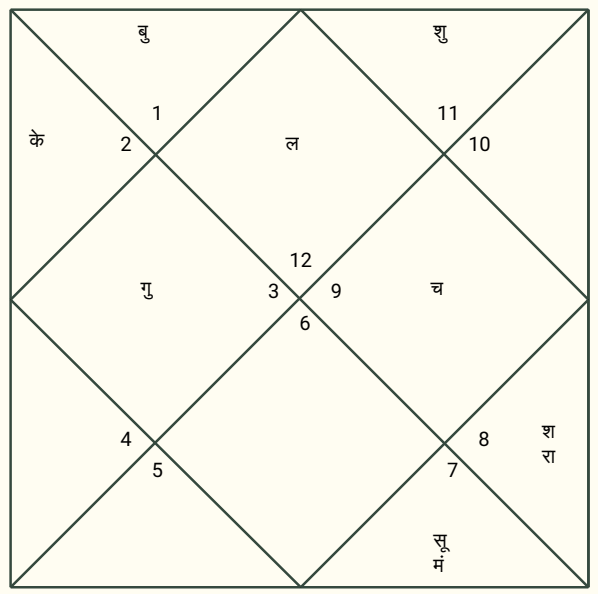

चंद्र चार्ट

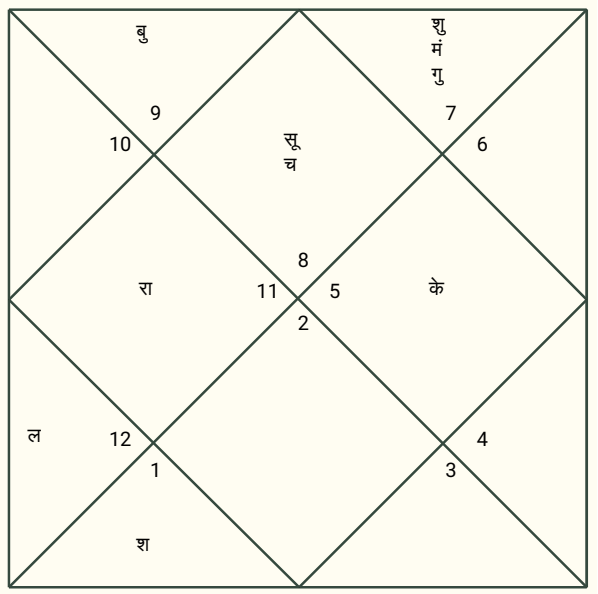

वेदिक ग्रह स्थिति (साइडरियल)

वैदिक ज्योतिष में, ग्रहों की स्थिति का निर्धारण निरयन रेखांश पर निर्भर करता है, जहाँ "निर-अयन" का अर्थ है कोई गति नहीं। यहाँ, अयनांश, गतिमान वसंत विषुव और सटीक नक्षत्र शून्य मेष बिंदु के बीच सटीक डिग्री अंतर, पश्चिमी ज्योतिष में उपयोग किए जाने वाले सायन रेखांश से घटाया जाता है। अयनांश की गणना के लिए उपयोग की जाने वाली विभिन्न प्रथाओं में से, यहाँ उपयोग की जाने वाली विधि चित्रपक्ष है।

चित्रपक्ष लाहिड़ी : 23° 27‘ 2“

नीचे दी गई तालिका दर्ज की गई तिथि, समय, और स्थान पर ग्रहों की स्थिति दर्शाती है (ग्रहों की निरयण देशांतर)

ग्रह	स्थान	डिग्री	राशि	प्रभु	नक्षत्र	प्रभु
रवि	223° 18‘ 28“	13° 18‘ 28“	वृश्चिक	मंगल	पूर्व फाल्गुनी	शनि
चंद्र	229° 46‘ 10“	19° 46‘ 10“	वृश्चिक	मंगल	पुष्य	बुध
बुध	240° 56‘ 21“	0° 56‘ 21“	धनुष	गुरू	रेवती	केतु
शुक्र ℞	196° 22‘ 54“	16° 22‘ 54“	तुला	शुक्र	पूर्वाषाढ़ा	राहु
मंगल	181° 55‘ 12“	1° 55‘ 12“	तुला	शुक्र	पुनर्वसु	मंगल
गुरू	207° 26‘ 6“	27° 26‘ 6“	तुला	शुक्र	पूर्वभाद्रपदा	गुरू
शनि ℞	24° 17‘ 46“	24° 17‘ 46“	मेष	मंगल	आद्रा	शुक्र
लग्न	359° 7‘ 38“	29° 7‘ 38“	मीन	गुरू	विशाखा	बुध
राहु ℞	304° 14‘ 6“	4° 14‘ 6“	कुम्भ	शनि	स्वाति	मंगल
केतु ℞	124° 14‘ 6“	4° 14‘ 6“	सिंह	रवि	कृत्तिका	केतु

℞ वक्री को दर्शाता है

नीचे दी गई तालिका राशि चक्र में ग्रहों की स्थिति को उनके पश्चिमी नामों के साथ दर्शाती है।

ग्रह	स्थान	डिग्री	राशि	प्रभु	नक्षत्र	प्रभु
सूर्य	223° 18′ 28″	13° 18′ 28″	स्कॉर्पियो	मंगल	पूर्व फाल्गुनी	शनि
चंद्र	229° 46′ 10″	19° 46′ 10″	स्कॉर्पियो	मंगल	पुष्य	बुध
बुध	240° 56′ 21″	0° 56′ 21″	सैजिटेरियस	गुरू	रेवती	केतु
शुक्र ℞	196° 22′ 54″	16° 22′ 54″	लिब्रा	शुक्र	पूर्वाषाढ़ा	राहु
मंगल	181° 55′ 12″	1° 55′ 12″	लिब्रा	शुक्र	पुनर्वसु	मंगल
गुरू	207° 26′ 6″	27° 26′ 6″	लिब्रा	शुक्र	पूर्वभाद्रपदा	गुरू
शनि ℞	24° 17′ 46″	24° 17′ 46″	एरीज़	मंगल	आद्रा	शुक्र
लग्न	359° 7′ 38″	29° 7′ 38″	पाइसीज़	गुरू	विशाखा	बुध
राहु ℞	304° 14′ 6″	4° 14′ 6″	एक्वेरियस	शनि	स्वाति	मंगल
केतु ℞	124° 14′ 6″	4° 14′ 6″	लियो	सूर्य	कृत्तिका	केतु

℞ वक्री को दर्शाता है

विंशोत्तरी दशा

वैदिक ज्योतिष के अनुसार विंसोत्तरी दशा सबसे महत्वपूर्ण और सर्वोच्च दशा है। 120 वर्षों की अवधि में 9 दशाएँ विभाजित हैं। प्रत्येक दशा का एक शासक ग्रह होता है और किसी व्यक्ति का जीवन सीधे तौर पर उस विशेष दशा को नियंत्रित करने वाले उसके शासक ग्रह की प्रकृति से प्रभावित होता है। पहली महादशा किसी दिए गए नक्षत्र में जन्म के चंद्रमा की स्थिति से निर्धारित होती है।

जन्म समय से शेष बचा हुआ दशा काल : 13 years and 16 days

नीचे विभिन्न महादशाओं का प्रारंभ समय और समाप्ति समय दिया गया है

प्रभु	शुरुआत	समापन
बुध	15-Dec, 1966	15-Dec, 1983
केतु	15-Dec, 1983	15-Dec, 1990
शुक्र	15-Dec, 1990	15-Dec, 2010
सूर्य	15-Dec, 2010	14-Dec, 2016
चंद्र	14-Dec, 2016	15-Dec, 2026
मंगल	15-Dec, 2026	15-Dec, 2033
राहु	15-Dec, 2033	15-Dec, 2051
गुरू	15-Dec, 2051	15-Dec, 2067
शनि	15-Dec, 2067	15-Dec, 2086

शनि भिन्नाष्टकवर्ग

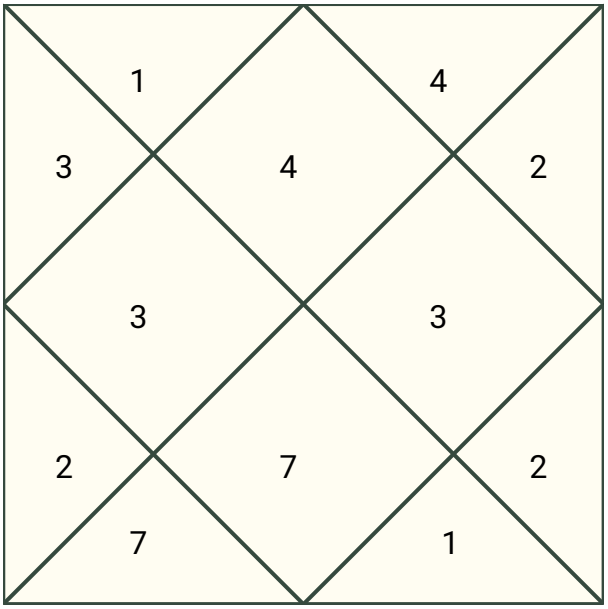

अंक: 39

	सूर्य	चंद्र	बुध	शुक्र	मंगल	गुरू	शनि	लग्न	प्राप्तांक
मीन	0	0	0	1	1	1	0	1	4
मेष	0	1	0	0	0	0	0	0	5
वृषभ	1	0	1	0	0	0	0	1	8
मिथुन	1	0	0	0	0	0	1	1	11
कर्क	0	0	1	0	1	0	0	0	13
सिंह	1	0	1	1	1	1	1	1	20
कन्या	1	1	1	1	1	1	1	0	27
तुला	0	0	1	0	0	0	0	0	28
वृश्चिक	1	0	1	0	0	0	0	0	30
धनुष	1	0	0	0	1	0	0	1	33
मकर	0	1	0	0	0	0	0	1	35
कुम्भ	1	0	0	0	1	1	1	0	39
प्राप्तांक	7	3	6	3	6	4	4	6	39

सर्वाष्टकवर्ग चार्ट

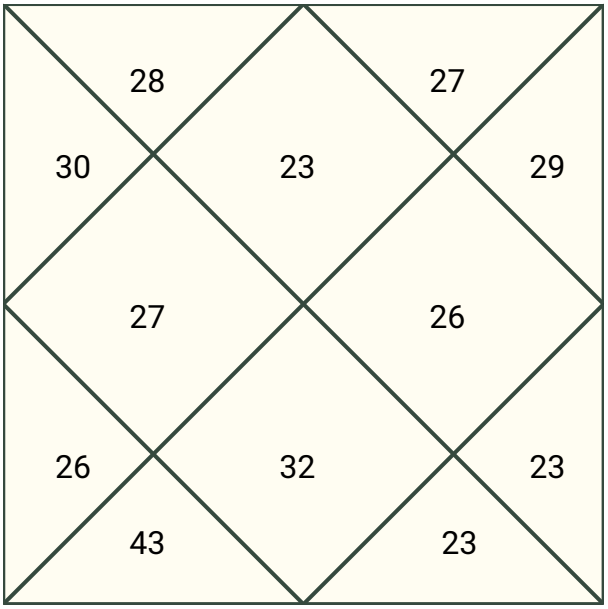

अंक: 337

	सूर्य	चंद्र	बुध	शुक्र	मंगल	गुरू	शनि	प्राप्तांक
मेष	5	5	6	2	5	4	1	28
वृषभ	5	4	5	4	4	5	3	30
मिथुन	4	5	4	7	0	4	3	27
कर्क	3	4	3	5	3	6	2	26
सिंह	6	7	6	5	5	7	7	43
कन्या	4	5	4	3	4	5	7	32
तुला	3	2	6	5	3	3	1	23
वृश्चिक	4	2	4	4	2	5	2	23
धनुष	3	4	5	4	2	5	3	26
मकर	4	5	4	4	5	5	2	29
कुम्भ	5	4	4	6	2	2	4	27
मीन	2	2	3	3	4	5	4	23
कुल	48	49	54	52	39	56	39	337

आपकी जन्म कुंडली में शनि का विश्लेषण

शनि, जिसे शनि देव, सूर्यपुत्र या मंद के नाम से जाना जाता है, अनुशासन, कर्म और न्याय से जुड़े एक प्रभावशाली ग्रह के रूप में प्रतिष्ठित है। नवग्रहों में, शनि को परीक्षा और कर्मफल के ग्रह के रूप में पूजा जाता है। बृहद् पाराशर होरा शास्त्र के अनुसार, शनि का दिव्य समकक्ष भगवान ब्रह्मा हैं, जो सृष्टि के रचनाकार और समस्त ब्रह्मांडीय ज्ञान के स्रोत हैं। पंचभूत तत्वों में, शनि वायु तत्व का स्वामी है और इसे एक शक्तिशाली पुरुष ऊर्जा के रूप में देखा जाता है।

शनि को जाति व्यवस्था में शूद्र है, सेवा और परिश्रम का प्रतीक माना जाता है, जो श्रमिक वर्ग और कष्ट सहने वालों का प्रतिनिधित्व करता है। तमसिक गुणों से युक्त, शनि का स्वभाव कठोर, निष्क्रिय और अनुशासनप्रिय होता है।

ग्रहों के संबंधों में, शनि बुध और शुक्र के प्रति मित्रवत रहता है, जबकि सूर्य, चंद्र और मंगल को शत्रु मानता है। वहीं, गुरु के प्रति इसकी तटस्थ दृष्टि होती है।

शनि मकर और कुंभ राशि का स्वामी है। यह तुला राशि में उच्च का होता है, जहाँ इसकी शक्ति सर्वोत्तम होती है, जबकि मेष राशि में नीच का होकर कमजोर स्थिति में आ जाता है। कुंडली में एक मजबूत शनि व्यक्ति को धैर्य, सहनशक्ति और परिश्रम से सफलता प्राप्त करने का वरदान देता है। इसके विपरीत, यदि शनि कमजोर या पीड़ित हो, तो यह अवरोध, देरी और संघर्ष लेकर आता है, जिससे व्यक्ति को धैर्य और सहनशक्ति की कड़ी परीक्षा से गुजरना पड़ता है।

आपकी जन्म कुंडली में, शनि लग्न से 2nd भाव में, चन्द्रमा से 6th भाव में,, दुर्बल में, में, मेष में, आद्रा नक्षत्र के चौथे पद में, शनि क्रमशः आठवे भाव में गुरू को देख रहा है , और गुरू द्वारा आठवे के भाव से उसे दृष्टि प्राप्त हो रही है।

द्वितीय भाव में शनि

यदि शनि दूसरे भाव में स्थित हो तो यह बताता है कि जातक आखिरकार विदेशी धरती में बसकर संपति और भौतिक सुख का आनंद लेगा। ऐसे जातक कुछ आर्थिक समस्याओं का सामना कर सकते हैं। हालाँकि, उनमें आत्म-सम्मान, साहस, और ज्ञान होता है। यह समय लकड़ी, कोयला या लोहे जैसे उद्योगों द्वारा धन कमाने की ओर संकेत देता है। यह स्थिति जातक को अयोग्य और कठोर बनाती है, लेकिन यदि शनि अनुकूल दृष्टि को प्राप्त करता है तो वे दयालु, धार्मिक और ईमानदार बन सकते हैं।

शनि गोचर

गोचर चार्ट

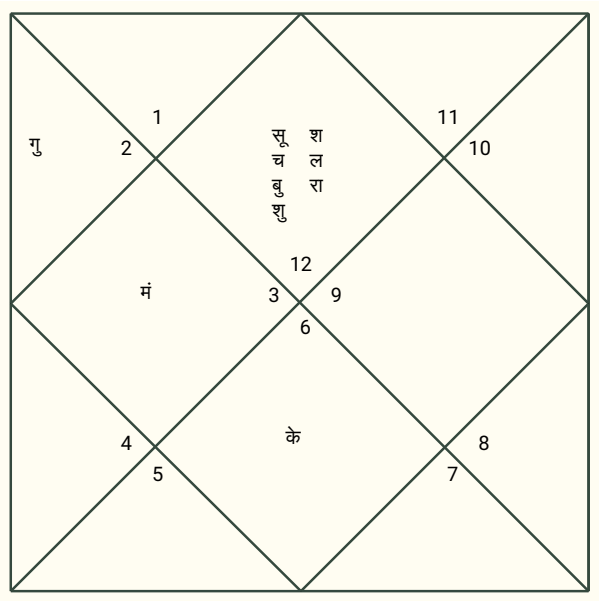

शनि March 29, 2025 से June 03, 2027 तक मीन राशि में गोचर कर रहा है। यह गोचर आपकी जन्म राशि वृश्चिक से गिने जाने वाले पांचवे भाव से होकर गुजरेगा। शनि आपके लिए रजत मूर्ति है, जिसके परिणामस्वरूप इन सकारात्मक प्रभावों की अभिव्यक्ति में मध्यम कमी आएगी।

शनि मीन राशि में 2 years, 2 months and 4 days तक रहेगा और 2 बार वक्री होगा। पहला वक्री होना July 13, 2025 से शुरू होगा और November 28, 2025 पर मीन राशि में समाप्त होगा और 4 months and 14 days तक चलेगा। दूसरा प्रतिगमन July 27, 2026 को शुरू होगा, और मेष राशि में December 11, 2026 को समाप्त होगा, जो 4 months and 14 days तक चलेगा।

शनि का अगला गोचर June 03, 2027 को होगा जब शनि मेष राशि में चला जाएगा।

शनि का 5 भाव से गोचर अनुकूल परिणाम देता है, जो राशि के मध्य बिंदु के आसपास अपने चरम प्रभाव पर पहुँचता है। शनि आपके लिए रजत मूर्ति है, जिसके परिणामस्वरूप इन सकारात्मक प्रभावों की अभिव्यक्ति में मध्यम वृद्धि होगी।

शनि आपके जन्म राशि से पंचम भाव में गोचर कर रहा है

चंद्र राशि से पंचम भाव में शनि के गोचर के दौरान, व्यक्ति को कुछ परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है साथ ही व्यक्ति जीवन में असफल भी हो सकता है। व्यक्ति को धन की हानि भी हो सकती है तथा व्यक्ति को उसके बच्चों की भलाई से सम्बन्धित चिन्ताऐं भी हो सकती हैं। व्यक्ति की उसके परिवारजन व मित्रों आदि से असहमति हो सकती है तथा साथ ही संघर्ष भी हो सकता है, जिससे पारिवारिक माहौल खराब हो सकता है। व्यक्ति के द्वारा किए गए प्रयास विफल हो सकते हैं व साथ ही उपक्रम भी विफल हो सकते हैं व योजनाएँ असफल हो सकती हैं।

व्यक्ति की उसके परिवारजन व मित्रों आदि से बहस हो सकती है व मुकदमेबाजी भी हो सकती है, जिससे मानसिक परेशानी हो सकती है व भ्रम की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। व्यक्ति के जीवन में दुर्घटना भी हो सकती है तथा साथ ही धन की हानि भी हो सकती है, जिससे व्यक्ति के खर्चे बढ़ सकते हैं व कठिनाई भी बढ़ सकती है।

कुल मिलाकर, इस गोचर से व्यक्ति के जीवन में कुछ परेशानियाँ व अनिश्चितताएँ आ सकती हैं, किन्तु सकारात्मक दृष्टिकोण बनाए रखने और व्यावहारिक समाधान पर ध्यान केंद्रित करने से इन परेशानियों को धैर्य और दृढ़ता के साथ पार किया जा सकता है।

राशि के माध्यम से ग्रहों का पारगमन अनुकूल और प्रतिकूल दोनों तरह के परिणाम देता है, जो व्यक्ति की जन्म राशि (जन्म चंद्र राशि) के सापेक्ष उसके घर की स्थिति पर निर्भर करता है, जहां पारगमन होता है। कभी-कभी, ये सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव जन्म राशि के सापेक्ष विशेष घरों में अन्य पारगमन ग्रहों की स्थिति से समाप्त हो जाते हैं। जब किसी पारगमन ग्रह के सकारात्मक प्रभाव निष्प्रभावी हो जाते हैं, तो उसे गोचर वेध कहते हैं, और इसी तरह, जब गोचर ग्रह से उत्पन्न होने वाले नकारात्मक प्रभाव निष्प्रभावी हो जाते हैं, तो उसे विपरीत वेध कहा जाता है।

शास्त्रों के अनुसार सूर्यदेव को शनि (शनैश्चर) का पिता माना गया है। इस दिव्य सम्बन्ध के कारण ही सूर्य शनि पर गोचर वेध या विपरीत वेध नहीं लगाते।

கிரகங்கள்	शुरुआत	समापन	अवधि
बुध	Sep 15, 2025	Oct 03, 2025	17 days
	Sep 07, 2026	Sep 26, 2026	18 days
शुक्र	Oct 09, 2025	Nov 02, 2025	24 days
	Aug 01, 2026	Sep 02, 2026	32 days
	Nov 06, 2026 ℞	Nov 22, 2026	16 days
मंगल	Jul 28, 2025	Sep 13, 2025	1 month and 16 days
केतु	Mar 29, 2025	May 18, 2025	1 month and 18 days

ऊपर ग्रहों के लिए वेध काल का उल्लेख किया गया है, जिसमें चंद्र शामिल नहीं हैं। चंद्रमा का वेध काल रिपोर्ट के अंत में दिया गया हैं।.

शनि के मीन राशि में गोचर का प्रभाव

मीन लग्न से संबंधित जातकों के लिए यह गोचर उनके प्रथम भाव यानी तनु भाव से प्रभावी होता है। इस गोचर को मीन राशि द्वारा प्रदर्शित किया जाता है और इसका स्वामी बृहस्पति होता है। यद्यपि व्ययेश के रूप में शनि का प्रभाव जातक के स्वास्थ्य और शारीरिक बनावट को प्रभावित कर सकता है, इसके संबंध में कुछ छोटी-मोटी समस्याएं उत्पन्न कर सकता है लेकिन यह समयावधि जातक को अपने धन और अब सभी तरह के कल्याण को बेहतर ढंग से प्रबंधित करने का भी अवसर प्रदान करता है और उसे मजबूत भी बनाता है। इस अवधि में जातक के नए संपर्क बन सकते हैं, विशेषकर किसी विदेशी स्थान पर व्यवसाय के आसार बन सकते हैं। जातक अपने व्यक्तिगत और व्यावसायिक दोनों ही क्षेत्र में अपना प्रभाव बढ़ा सकता है और उन्नति को बढ़ावा दे सकता है।

तीसरा पक्ष: शनि का तीसरा पक्ष वृषभ राशि के तीसरे भाव यानी पराक्रम भाव को प्रभावित करता है और इसका स्वामी शुक्र है। यह गोचर मजबूती और आंतरिक शक्ति को बढ़ाता है क्योंकी इस दौरान जातक का खासकर अपने भाई-बहनों से संबंधित मामलों में खुशियां प्राप्त हो सकती हैं और उसे परीक्षा की स्थितियों से भी गुजरना पड़ सकता है। हालांकि, जातक अपने साहस और लचीले व्यवहार, अपने दृढ़ संकल्प से लक्ष्यों को प्राप्त कर सकता है और ऊर्जा को बढ़ा सकता है।

सातवां पक्ष: शनि का सातवां पक्ष कन्या राशि के सातवें भाव यानी कलत्र भाव को प्रभावित करता है और इसका स्वामी बुध है। ऐसे में विवाह से संबंधित मामलों में कुछ छोटे-मोटे व्यवधान आ सकते हैं लेकिन इसके बावजूद भी रिश्तों को अच्छे से समझा जा सकता है और उन्हें मजबूत करने के अवसर प्राप्त होंगे। व्यावसायिक दृष्टि से भी इस अवधि में शुरुआती दौर में उतार-चढ़ाव आ सकते हैं लेकिन इन अनुभवों से अंत में जातक को बेहतर लाभ मिलेगा और उसकी उन्नति का मार्ग खुलेगा।

दसवां पक्ष: शनि की दसवीं दृष्टि धनु राशि के दसवें भाव यानी कर्म भाव को प्रभावित करती है और इसका स्वामी बृहस्पति है। ऐसे में, इस गोचर के दौरान जातक का संबंध उच्च अधिकारियों के साथ बन सकता है, मजबूत संबंध बनाने के अवसर मिल सकते हैं जिससे उसके करियर में भी विकास होगा। हालांकि, जातक को अपने व्यावसायिक जीवन के शुरुआती चरण में कुछ बाधाएं आ सकती हैं लेकिन वह अपनी मजबूती, दृढ संकल्प और अपने में परिवर्तन करके सकारात्मक परिणाम को प्राप्त कर सकता है और लंबे समय तक चलने वाली उपलब्धियां को भी प्राप्त करने का मार्ग प्राप्त कर सकता है।

शनि, जो किसी एक राशि में भ्रमण करने में लगभग ढाई वर्ष का समय लेता है, अपने गोचर के दौरान लगातार समान प्रभाव नहीं देता। एक राशि दो और आधे नक्षत्रों के भाग मिलकर बनी होती है, और शनि इन नक्षत्रों से विभिन्न अंतरालों पर गुजरता है, जिससे शनि के गोचर के प्रभावों में उतार-चढ़ाव आता है।इसके अलावा, अष्टकवर्ग सिद्धांत के अनुसार, प्रत्येक राशि को आठ कक्षाओं में विभाजित किया जाता है, जो सात ग्रहों और लग्न से संबंधित होती हैं। इनका क्रम इस प्रकार होता है – शनि, बृहस्पति, मंगल, सूर्य, शुक्र, बुध, चंद्रमा और लग्न।साथ ही, वक्री गति के प्रभाव, गोचर वेध या विपरीत वेध, और नक्षत्र वेध भी गोचर करते हुए ग्रह द्वारा दिए गए परिणामों को प्रभावित करते हैं। नीचे शनि के गोचर से संबंधित भविष्यवाणियां और तिथियां दी गई हैं, जो उपरोक्त जानकारी पर आधारित हैं।

शनि दोष

शनि दोष उस चुनौतीपूर्ण स्थिति को दर्शाता है जो शनि के विशेष गोचर स्थानों के कारण उत्पन्न होती है, जिसे जन्म राशि (जन्म के समय चंद्रमा की राशि) से गणना की जाती है। ये चुनौतियाँ मुख्य रूप से शनि के प्रभावों से जुड़ी होती हैं, जैसे विभिन्न कार्यों में देरी और बाधाएँ। शनि के गोचर प्रभावों को चार अलग-अलग चरणों में विभाजित किया जाता है, जो जन्म राशि के संबंध में उसके भाव पर निर्भर करता है।

जब शनि जन्म राशि से चौथे भाव में गोचर करता है, तो इस अवधि को अर्धाष्टम शनि या कभी-कभी कंटक शनि कहा जाता है। इस समय, व्यक्ति को हल्की चुनौतियों या रुकावटों का सामना करना पड़ सकता है। इससे कठिन अवस्था तब आती है जब शनि जन्म राशि से सातवें भाव में गोचर करता है, जिसे भी कंटक शनि कहा जाता है। इस दौरान, चौथे घर की तुलना में अधिक गंभीर चुनौतियाँ उत्पन्न हो सकती हैं। हालांकि, इनमे सबसे कठिन अवस्था अष्टम शनि मानी जाती है, जो तब होती है जब शनि जन्म राशि से आठवें भाव में गोचर करता है। यह अवधि अत्यधिक कठिनाइयों और बढ़ी हुई बाधाओं से भरी होती है, जिससे इसे अर्धाष्टम शनि, कंटक शनि और अष्टम शनि के तीनों चरणों में सबसे चुनौतीपूर्ण माना जाता है।

इन गोचरों के अतिरिक्त, शनि का सबसे अशुभ प्रभाव शनि साढ़े साती के दौरान देखा जाता है, जो लगभग साढ़े सात वर्षों तक चलता है। यह अवधि तब आती है जब शनि जन्म राशि से बारहवें, पहले और दूसरे भाव में गोचर करता है। साढ़े साती के प्रभाव इसके तीन चरणों में विभाजित होते हैं। उदय चरण, जो जन्म राशि से बारहवें भाव में गोचर के दौरान होता है, और अस्त चरण, जो दूसरे भाव में गोचर के दौरान होता है, आमतौर पर तुलनात्मक रूप से हल्के प्रभाव देते हैं। हालांकि, चरम चरण, जब शनि जन्म राशि में गोचर करता है, साढ़े साती का सबसे कठिन और अशुभ चरण माना जाता है, जिसमें व्यक्ति को अत्यधिक कठिनाइयों और चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

#	शनि दोष	सक्रिय है
1	अर्ध-अष्टम शनि	❌
2	कंटक शनि	❌
3	अष्टम शनि	❌
4	शनि साढ़े साती	❌

शनि के विभिन्न कक्षों से पारगमन

प्रत्येक ग्रह एक विशिष्ट अवधि के लिए एक राशि से होकर गुजरता है। चिन्ह को आठ बराबर खंडों में विभाजित किया गया है, जिन्हें काक्ष्य कहा जाता है। प्रत्येक कक्ष एक विशिष्ट ग्रह के आधिपत्य में शासित होता है, इस क्रम में शनि, बृहस्पति, मंगल, सूर्य, शुक्र, बुध, चंद्रमा और अंत में लग्न क्रम से शासन करता है।

शनि के भिन्नाष्टकवर्ग में, मीन राशि के 4 अंक हैं। ये 4 अंक शुक्र, मंगल, गुरू, और लग्न द्वारा योगदान किए गए हैं।

जब शनि चार बिन्दुओं वाली राशि से होकर गोचर करता है, तो जातक को सामान्य या मध्यम फल प्राप्त होते हैं, जो न तो अत्यधिक शुभ होते हैं और न ही अशुभ। इसलिए, यह कहा जा सकता है कि यह अवधि शांति, संतुलन और स्थिरता प्रदान करती है, जहाँ जातक को सुख और दुख दोनों का समान रूप से अनुभव होता है, लेकिन सुख व दुःख दोनों में से कोई भी अत्यधिक प्रभावी नहीं होता। इसलिए, यह समय जातक के लिए स्वयं पर कार्य करने का एक उत्तम अवसर हो सकता है, जहाँ उसे छोटे उतार-चढ़ाव से प्रभावित हुए बिना, जीवन के सभी क्षेत्रों जैसे कार्य, सम्बन्ध व व्यक्तिगत विकास में स्थिर प्रगति बनाए रखने का प्रयास करना चाहिए।

जब शनि शुक्र, मंगल, गुरू, और लग्न द्वारा शासित कक्ष से होकर गुजरता है, तो यह मीन राशि में 5th भाव से संबंधित अधिकतम परिणाम प्रकट करता है।

जब शनि रेखाओं के साथ चंद्रमा/जन्म राशि में होता है, तो इससे जातक को कृषि और लोहे के व्यापार के क्षेत्र में धन, समृद्धि व लाभ प्राप्त हो सकता है। इसके अलावा, इस अवधि में जातक को कानूनी मामलों और मुकदमों में विजय, पैतृक संपत्ति से लाभ और विरासत की प्राप्ति हो सकती है।

इस अवधि में जातक को सरकार का अटूट सहयोग प्राप्त होगा, वह अपने विरोधियों और शत्रुओं पर विजय प्राप्त करेगा, पुण्यशील व्यक्तियों की संगति में रहेगा तथा उसकी धार्मिक आस्था में वृद्धि होगी। कृषि का क्षेत्र जातकों के लिए विशेष लाभकारी क्षेत्र होगा तथा इससे वे समृद्धि प्राप्त करेंगे, जिससे जातकों की आर्थिक स्थिरता सुनिश्चित होगी।

शनि का किसी कक्षा में बिंदु के साथ गोचर होने पर, जातक को पैतृक संपत्ति से धन की प्राप्ति होगी तथा साथ ही प्रभावशाली व धर्मपरायण व्यक्तियों से सहयोग प्राप्त होगा। इस अवधि में जातक को धोखेबाजों पर विजय प्राप्त होगी, भूमि अधिग्रहण होगा, आध्यात्मिक उन्नति होगी व साथ ही भौतिक सुख-सुविधाओं में भी वृद्धि होगी, जिसमें शक्तिशाली संस्थानों से अनुग्रह और लाभ भी शामिल हैं।

जब शनि सूर्य, चंद्र, बुध, और शनि द्वारा शासित कक्ष से होकर गुजरता है, तो यह मीन राशि में 5th भाव से संबंधित परिणामों का केवल एक हिस्सा ही सामने लाता है।

जब शनि शून्य रेखा अथवा केवल एक या दो रेखाओं के साथ स्थित होता है, तो इससे महत्वपूर्ण धन हानि हो सकती है, भावनात्मक हानि हो सकती है तथा साथ ही जातक स्वास्थ्य से सम्बन्धित परेशानियों का भी सामना करना पड़ सकता है। जातक मानसिक तौर पर परेशान हो सकता है व शारीरिक शारीरिक तौर पर पीड़ा व दुख का अनुभव कर सकता है। अतः, इस अवधि में जातक को अत्यधिक धैर्य व सहनशीलता की आवश्यकता होती है।

इस अवधि में जातक पर हमले हो सकते हैं तथा जातक को शारीरिक समस्याएँ हो सकती हैं, तथा वे दुर्घटनाओं का शिकार हो सकते हैं। इस अवधि में जातक को सरकार से भय बना रहता है तथा उन्हें निरंतर कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है। इसके अतिरिक्त, जातक को धन व वित्तीय संसाधनों का प्रबंधन समझदारी से व सावधानीपूर्वक करना चाहिए, जिससे किसी भी संभावित आर्थिक समस्या से बचा जा सके, क्योंकि इस गोचर के दौरान वित्तीय हानि और आर्थिक अस्थिरता की संभावना बनी रहती है।

जब कोई ऐसी राशि लग्न के रूप में उदित होती है जिसमें सबसे कम बिंदु होते हैं, तो जातक को जीवन के प्रत्येक चरण में गंभीर परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। यह प्रभाव विशेष रूप से मारक दशा के दौरान या जब सूर्य हर महीने इस राशि को पार करता है, अधिक तीव्र होता है, जिससे जातक के जीवन में परेशानियाँ उत्पन्न होती हैं, जिसमें जीवन का जोखिम भी शामिल हो सकता है। बिन्दुओं से रहित कक्षा से गोचर परेशानियों में वृद्धि करता, जिससे समस्याएँ, चिंता, भूमि हानि हो सकती है तथा जातक के सम्बन्ध खराब हो सकते हैं।

पहले काक्ष्य

शनि के कक्ष में शनि का गोचर करना बहुत सी चुनौतियाँ सामने ला सकता है, जिससे व्यक्तिगत विकास और प्रतिरोधक क्षमता बढ़ सकती है। इस समय के दौरान, जातक को दूसरों के साथ असहमति की स्थिति या तालमेल बैठाने में मुश्किलों का सामना करना पड़ सकता है। इससे कुछ समय के लिए संपति या अन्य संसाधनों में गिरावट और निराशा प्राप्त हो सकती है। ये पल धैर्य़ और स्व-जागरूकता की सीख देते हैं, जिससे अंदरूनी शक्ति विकसित करने और उज्ज्वल भविष्य की तैयारी करने में मदद मिलती है।

शनि के पहले कक्ष से होकर शनि के गुजरने का समय नीचे दिया गया है।

शुरुआत	समापन
29-Mar-2025	02-May-2025
28-Sep-2025 ℞	25-Jan-2026

दूसरे काक्ष्य

गुरु की कक्षा से शनि के गोचर के दौरान व्यक्ति को सकारात्मक व संतुष्टिदायक परिणाम प्राप्त हो सकते हैं। इस अवधि में व्यक्ति को भूमि या संपत्ति में लाभ प्राप्त हो सकता है, साथ ही खुशी प्राप्त हो सकती व व्यक्ति उत्साहित रह सकता है। व्यक्ति के नैतिक मूल्यों में स्वाभाविक वृद्धि हो सकती है, जिससे व्यक्ति प्रेरणा मिल सकती है व सम्मान प्राप्त हो सकता है, जिससे व्यक्ति दूसरों के साथ दयापूर्ण व्यवहार करेगा। इस अवधि में व्यक्ति को खुशी प्राप्त हो सकती है व साथ ही व्यक्तिगत विकास के अवसर प्राप्त हो सकते हैं, जिससे व्यक्ति के सम्बन्ध सकारात्मक व मज़बूत बनेंगे।

गुरू के दूसरे कक्ष से होकर शनि के गुजरने का समय नीचे दिया गया है।

शुरुआत	समापन
02-May-2025	27-Jun-2025
29-Jul-2025 ℞	28-Sep-2025
25-Jan-2026	01-Mar-2026

तीसरे काक्ष्य

शनि का मंगल की कक्षा से गोचर में व्यक्ति का विकास हो सकता है व साथ ही सम्मानप्राप्त हो सकता है। इस अवधि में, व्यक्तियों को पशुधन से लाभ प्राप्त हो सकता है तथा व्यक्ति एक नया घर बना सकता है अथवा जमीन प्राप्त कर सकता है। इस अवधि में व्यक्ति के उसके भाइयों के साथ सम्बन्ध मजबूत हो सकते हैं, इससे सम्बन्धों में गहरी समझ और सहयोग में वृद्धि होगी, तथा साथ ही पूर्व में आई परेशानियों अथवा प्रतिद्वंद्वियों से अप्रत्याशित लाभ भी हो सकता है। व्यवसाय आदि में भी आशाजनक व सकारात्मक परिणाम प्राप्त हो सकते हैं। इस दौरान व्यक्ति की अपनी पहचान बनती है व साथ ही व्यक्ति के जीवन में स्थिरता आती है, जिससे व्यक्ति का जीवन समृद्ध व संतोषजनक होता है।

मंगल के तीसरे कक्ष से होकर शनि के गुजरने का समय नीचे दिया गया है।

शुरुआत	समापन
27-Jun-2025	29-Jul-2025
01-Mar-2026	31-Mar-2026

चौथे काक्ष्य

शनि के सूर्य के कक्ष में गोचर करने के दौरान, कुछ चुनौतियाँ जैसेकि अधिकारियों से जुड़ी छोटी-छोटी समस्याएँ, आँखों में जलन होना या काम से जुड़ी अस्थायी परेशानियाँ आ सकती हैं। दूसरों से व्यवहार करते समय अधिक धैर्य रखने की आवश्यकता हो सकती है। यह समय स्वास्थ्य पर अधिक ध्यान देने और कार्य प्रबंधन में सावधानी बरतने और आंतरिक विकास के अवसर भी देने वाला है। यह समय प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ावा देने वाला, व्यक्तिगत लक्ष्यों पर ध्यान केंद्रित करने वाला व आगे के लिए और अधिक संतुलित व मजबूत मार्ग बनाने में मदद करने वाला है।

सूर्य के चौथे कक्ष से होकर शनि के गुजरने का समय नीचे दिया गया है।

शुरुआत	समापन
31-Mar-2026	01-May-2026
02-Nov-2026 ℞	18-Jan-2027

पांचवे काक्ष्य

शनि का शुक्र की कक्षा से गोचर होने के कारण, व्यक्ति के सम्बन्ध सकारात्मक व मज़बूत होते हैं व साथ ही व्यक्ति को अपने स्वयं के विकास के अवसर प्राप्त होते हैं। इस शुभ अवधि में, कुछ व्यक्तियों को मित्रों आदि के माध्यम से धन लाभ प्राप्त हो सकता है। विशेष रूप से महिलाओं को ऐसे सहयोग प्राप्त हो सकते हैं, जिससे उनकी भलाई हो सकती है। पशुधन जैसे उपक्रमों के माध्यम से भी धन लाभ हो सकता है व दूसरों के सहयोग से और अधिक धन लाभ मिल सकता है। इस अवधि में व्यक्ति के नए सम्बन्ध बन सकते हैं व वर्तमान के सम्बन्ध मजबूत हो सकते हैं, जिससे व्यक्ति के दैनिक जीवन में खुशी और समृद्धि की बढ़ोतरी होती है।

शुक्र के पांचवे कक्ष से होकर शनि के गुजरने का समय नीचे दिया गया है।

शुरुआत	समापन
01-May-2026	10-Jun-2026
12-Sep-2026 ℞	02-Nov-2026
18-Jan-2027	28-Feb-2027

छटे काक्ष्य

शनि का बुध ग्रह के कक्ष में गोचर के दौरान, अध्ययन या बौद्धिकता संबंधी कार्यों पर ध्यान देने व प्रेरित होने में समस्याएँ हो सकती है। सिर थोड़ा हल्का और कभी-कभी सिरदर्द या थकान रह सकती है। यह समय स्वयं पर ध्यान देने और धैर्य रखने की ओर बढ़ाने वाला है, जिससे आपको शारीरिक और मानसिक तौर पर फिर से रिचार्ज होने में मदद मिलेगो। हल्की गतिविधि और आराम करने से, जातक फिर ऊर्जावान बन सकता है, जो इस समय को आंतरिक विकास और संतुलन के दौर में परिवर्तित कर देता है।

बुध के छटे कक्ष से होकर शनि के गुजरने का समय नीचे दिया गया है।

शुरुआत	समापन
10-Jun-2026	12-Sep-2026
28-Feb-2027	31-Mar-2027

सातवे काक्ष्य

चंद्रमा के कक्ष से शानि के गोचर के दौरान, जातक ऊर्जा में कमी के साथ अस्थाई आर्थिक या स्वास्थ्य समस्याएँ महसूस कर सकता है। आँखों में जलन या छाती की परेशानी जैसी समस्याएँ हो सकती हैं। यह अवधि धीमी गति से चलने, सेहत पर ध्यान केंद्रित करने और खुद का ख्याल रखने को प्रोत्साहित करती है। धैर्य और सावधानी के साथ, शक्ति और प्रतिरोधक क्षमता बनाए रखना संभव है। ऐसा कर आप इस समय को उपचार और व्यक्तिगत विकास दृष्टि से सबसे अच्छे समय में बदल सकते हैं।

चंद्र के सातवे कक्ष से होकर शनि के गुजरने का समय नीचे दिया गया है।

शुरुआत	समापन
31-Mar-2027	30-Apr-2027

आठवे काक्ष्य

जब शनि लग्न की कक्षा से गोचर करता है, तो इससे व्यक्ति की खुशी व ऊर्जा में सकारात्मक वृद्धि हो सकती है। आप स्वयं को स्वस्थ व दृढ़ महसूस कर सकते हैं, साथ ही व्यक्ति का समग्र कल्याण हो सकता है। व्यक्ति को कर्मचारियों या सहायकों जैसे विश्वासपात्र लोगों से सहयोग प्राप्त होता है, जिससे दैनिक जीवन आसान हो जाता है। यदि व्यक्ति इंजीनियरिंग या किसी तकनीकी क्षेत्र में कार्य करता है, तो उसे कुछ अतिरिक्त लाभ हो सकता है व साथ ही विकास के नए अवसर प्राप्त हो सकते हैं, जिससे व्यक्ति को उसकी मेहनत के सकारात्मक परिणाम प्राप्त हो सकते हैं। यह अवधि सामंजस्य व प्रगति की अवधि है, जिससे व्यक्ति का जीवन अधिक सकारात्मक होता है व साथ ही व्यक्तिगत विकास के अवसर भी प्राप्त होते हैं।

लग्न के आठवे कक्ष से होकर शनि के गुजरने का समय नीचे दिया गया है।

शुरुआत	समापन
30-Apr-2027	03-Jun-2027

शनि नक्षत्र में गोचर

12 राशियाँ 27 नक्षत्रों के सम्मिश्रण से बनी हैं। जब कोई ग्रह किसी राशि से होकर गुजरता है, तो वह लगभग ढाई नक्षत्रों से होकर गुजरता है। नीचे इन नक्षत्रों से बृहस्पति के पारगमन की भविष्यवाणियाँ और तिथियाँ प्रस्तुत हैं:

शनि उत्तरभाद्रपदा नक्षत्र में गोचर

शनि का उत्तरभाद्रपदा नक्षत्र में गोचर, जो गुरू द्वारा शासित है, जो तुला के आठवे भाव में स्थित है। मित्र तारा होने के कारण, उत्तरभाद्रपदा अच्छा प्रभाव उत्पन्न करता है।

शनि का उत्तरभाद्रपदा नक्षत्र में December 27, 2024 से April 28, 2025 तक गोचर और October 04, 2025 से January 20, 2026 तक।

शनि उत्तर फाल्गुनी नक्षत्र में गोचर

शनि का उत्तर फाल्गुनी नक्षत्र में गोचर, जो शनि द्वारा शासित है, जो मेष के दूसरे भाव में स्थित है। परम मैत्र तारा होने के कारण, उत्तर फाल्गुनी मध्यम प्रभाव उत्पन्न करता है।

शनि का उत्तर फाल्गुनी नक्षत्र में April 28, 2025 से October 03, 2025 तक गोचर , January 20, 2026 से May 17, 2026 तक और October 09, 2026 से February 08, 2027 तक।

शनि विशाखा नक्षत्र में गोचर

शनि का विशाखा नक्षत्र में गोचर, जो बुध द्वारा शासित है, जो धनुष के दसवे भाव में स्थित है। जन्म तारा होने के कारण, विशाखा मध्यम प्रभाव उत्पन्न करता है।

शनि का विशाखा नक्षत्र में May 17, 2026 से October 09, 2026 तक गोचर और February 08, 2027 से June 03, 2027 तक।

व्याख्या

शनि के उत्तरभाद्रपदा नक्षत्र के गोचर के दौरान, जातकों को प्रभावशाली परिवारों या अधिकारियों द्वारा सम्मान प्राप्त होता है, जिससे इन्हें लाभ और आर्थिक लाभ होने लगते हैं। यह नई पहचान जातक को खुशी और सुख-सुविधाएँ ला सकती है, जिससे एक सहायक वातावरण बनता है जिससे व्यक्तिगत और व्यवसायिक विकास को बढ़ावा मिलता है।

शनि के उत्तर फाल्गुनी और विशाखा नक्षत्र के गोचर के दौरान, व्यक्ति को बीमारियों से राहत होगी तथा साथ ही शांति व खुशी प्राप्त हो सकती है। हालांकि व्यक्ति स्वास्थ्य से सम्बन्धित परेशानियों से पूरी तरह मुक्त नहीं हो सकेंगे, लेकिन इस अवधि में व्यक्ति के लिए अधिक संतुलित दृष्टिकोण रखना महत्वपूर्ण होगा व इस अवधि में व्यक्ति की स्वस्थ मानसिकता का वृद्धि होती है।

मंत्र

हिंदू धर्म में माना जाता है कि मंत्र, जो विशेष जप होते हैं, उनके उच्चारण से उत्पन्न कंपनात्मक अनुनाद के कारण शरीर, मन और आत्मा पर शांतिपूर्ण प्रभाव पड़ता है। निम्नलिखित मंत्र विशेष रूप से शनि के लिए शांतिदायक प्रभाव माने जाते हैं।

ॐ प्राँ प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ॥
Om Pram Preem Praum Sah Shanaishcharaaya Namaha ||

ॐ भग-भवाय विदमहे मृत्यु-रूपाय धीमहि तन्नो सौरि: प्रचोदयात् ॥
Om Bhaga-Bhavaaya Vidmahe Mrityu-Roopaaya Dheemahi Tanno Saurih Prachodayaat ||

नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम् ।
छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम् ||
Neelanjanasamabhaasam Ravi-putram Yamaagrajam |
Chayamartanda-sambhutam Tam Namami Shanaishcharam ||

नीलद्युतिः शूलधरः किरीटी गृध स्थितस्त्रास करो धनुष्मान ।
चतुर्भुजः सूर्यसुतः प्रशान्तः सदाऽसतु महयं वरदो महात्मा ॥
Neeladyutih Shooladharah Kiriti Gridh Sthitastrasa Karo Dhanushmaan |
Chaturbhujah Suryasutah Prashantah Sadaa'satu Mahayam Varado Mahatma ||

प्रदान किए गए मंत्र सामान्य मंत्र हैं जिन्हें, शास्त्रों में उल्लेखित अनुसार, प्रतिदिन 108 बार जपने का निर्देश दिया गया है। इच्छित प्रभाव प्राप्त करने के लिए इन मंत्रों के सही उच्चारण के संबंध में किसी जानकार व्यक्ति से मार्गदर्शन लेना अनुशंसित है।

उपाय

शनि दोष के प्रभावों को पूरी तरह समाप्त नहीं किया जा सकता, न ही वे किसी व्यक्ति के जीवन पर पूर्ण रूप से हावी हो सकते हैं, क्योंकि जन्म कुंडली में अन्य ग्रह भी सकारात्मक प्रभाव डालते हैं। हालांकि, प्राचीन ग्रंथों में शनि द्वारा उत्पन्न चुनौतियों को कम करने के लिए कुछ उपाय बताए गए हैं। यहाँ कुछ प्रभावी उपाय दिए गए हैं:

- **भगवान हनुमान की पूजा करें:** हनुमान चालीसा या सुंदरकांड का पाठ करना, विशेष रूप से मंगलवार और शनिवार को, शनि देव के अशुभ प्रभावों को कम करने में सहायक माना जाता है।
- **शनि मंत्रों का जाप करें:** शनिवार को शनि संबंधित मंत्रों का जाप करने से शनि साढ़े साती के दौरान शांति और संतुलन बना रहता है। इसके अतिरिक्त, भगवान श्रीरामचंद्र के पिता राजा दशरथ द्वारा रचित शनि स्तोत्र का पाठ करने से भी शनि देव प्रसन्न होते हैं।
- **तेल का दीपक अर्पित करें:** शनिवार को काले तिल युक्त तेल का दीपक जलाकर पीपल के पेड़ के नीचे रखने से शनि दोष के प्रभाव को कम किया जा सकता है। यह उपाय हमारे पूर्वजों द्वारा अपनाया जाता रहा है।
- **कौवों और पक्षियों को भोजन कराएं:** चूंकि शनि देव का वाहन काला कौआ है, इसलिए नियमित रूप से कौवों और अन्य पक्षियों को भोजन कराना उन्हें प्रसन्न करने का एक प्रभावी उपाय माना जाता है।
- **प्रदोष काल में मंत्रों का जाप करें:** शनिवार को प्रदोष काल (संध्या समय) में शनि श्लोक, हनुमान चालीसा और अन्य शनि संबंधित मंत्रों का जाप करना शुभ माना जाता है। यदि किसी शनिवार को प्रदोष व्रत पड़ता है (शनि प्रदोष व्रत), तो इस व्रत का पालन करना विशेष रूप से शुभ माना जाता है और इससे शनि देव व भगवान शिव दोनों की कृपा प्राप्त होती है।
- **काले रंग की वस्तुओं का दान करें:** जरूरतमंदों को काले रंग की वस्तुएं दान करने से शनि देव की कृपा प्राप्त होती है और साढ़े साती के अशुभ प्रभाव कम किए जा सकते हैं।
- **दूसरों की सहायता करें:** जरूरतमंदों की सहायता करने से शनि देव की कृपा प्राप्त होती है, क्योंकि वैदिक ज्योतिष के अनुसार शनि कर्म के स्वामी माने जाते हैं। विशेष रूप से वृद्धों, दिव्यांगों और अनाथों की सेवा करना अत्यंत शुभ माना जाता है और इससे शनि देव प्रसन्न होते हैं।

यदि इन उपायों को श्रद्धा और समर्पण के साथ किया जाए, तो शनि दोष के प्रभावों को कम किया जा सकता है और जीवन में संतुलन और शांति लाई जा सकती है।

विप्रीत वेध चंद्रमा के लिए

जब गोचर ग्रह से उत्पन्न होने वाले नकारात्मक प्रभाव समाप्त हो जाते हैं, तो उसे विपरीत वेध कहते हैं। नीचे वे समय दिए गए हैं जब बृहस्पति के गोचर की अवधि के दौरान सूर्य और चंद्रमा विप्रीत वेध बनाते हैं। इन समयों के दौरान, बृहस्पति के हानिकारक प्रभाव कम हो जाएँगे।

चंद्रमा का विप्रीत वेध आमतौर पर लगभग 2 दिनों तक चलता है। अवधि नीचे दी गई तालिका में सूचीबद्ध हैं।

शुरुआत	समापन
Apr 10, 2025	Apr 13, 2025
May 08, 2025	May 10, 2025
Jun 04, 2025	Jun 06, 2025
Jul 01, 2025	Jul 04, 2025
Jul 29, 2025	Jul 31, 2025
Aug 25, 2025	Aug 27, 2025
Sep 21, 2025	Sep 24, 2025
Oct 18, 2025	Oct 21, 2025
Nov 15, 2025	Nov 17, 2025
Dec 12, 2025	Dec 14, 2025
Jan 08, 2026	Jan 11, 2026
Feb 05, 2026	Feb 07, 2026
Mar 04, 2026	Mar 06, 2026
Mar 31, 2026	Apr 03, 2026
Apr 28, 2026	Apr 30, 2026
May 25, 2026	May 27, 2026
Jun 21, 2026	Jun 24, 2026
Jul 18, 2026	Jul 21, 2026
Aug 15, 2026	Aug 17, 2026
Sep 11, 2026	Sep 14, 2026

Oct 09, 2026	Oct 11, 2026
Nov 05, 2026	Nov 07, 2026
Dec 02, 2026	Dec 04, 2026
Dec 29, 2026	Jan 01, 2027
Jan 26, 2027	Jan 28, 2027
Feb 22, 2027	Feb 24, 2027
Mar 22, 2027	Mar 24, 2027
Apr 18, 2027	Apr 20, 2027
May 15, 2027	May 17, 2027

Disclaimer: All astrological calculations are based on vedic rules & scientific equations and not on any published almanac. Though all efforts have been made to ensure the accuracy of all published reports and calculations, we do not rule out the possibility of any unexpected errors. Therefore, Brand cannot be held responsible for the decisions that may be taken by anyone based on this report. Brand assumes no liability for any decisions made based on output from our calculations or reports. The reports or remedies should not be used as substitute for advice, programs, or treatment that you would normally receive from a licensed professional, such as a financial or legal advisor, doctor, psychiatrist etc. Information, forecasts, predictions, reports and remedies provided by Brand should be taken strictly as guidelines and suggestions.

Prokerala.

www.prokerala.com

1800 425 0053

support@prokerala.com